श्री स्वामिनारायण मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक २०९ • डिसम्बर-२०२४
Volume no. 18, Issue No. 209 December 2024

Shree Swaminarayan (Gujarati Monthaly)

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 मूल्य रु. ५-००

गोल्डन सीटी (कच्छ) मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

मोडपर (कच्छ) मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

–मांडवी कच्छ के हरिभक्तो के द्वारा अहमदाबाद मंदिर में धामधूम से श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण का आयोजन कीया गया था ।

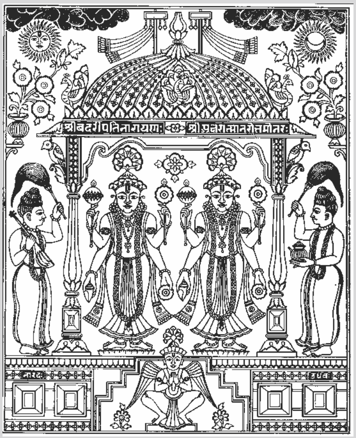

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ ● अंक : २०९ ● डिसम्बर-२०२४

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आस्ट्रेलिया, न्यूजीलेण्ड धर्मप्रवास ०६

०४. श्रीहरि के सातवे और आठवे वंशज के मुख से अमृत बचन ०७

०५. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १०

०६. भक्ति सुधा १२

०७. सत्संग समाचार २०

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

प्रिय हरिभक्तो,

दिवाली गई । नया वर्ष आ गया । भगवान श्री स्वामिनारायण सभी को बताकर गये है, कि जैसे बनिया अपना हिसाब दिन एक वर्षो में लगाता है । उसी प्रकार भगवान के भक्तो को भी सत्संग में कितना आगे बढे है और कम किये है। उसका लेखा-जोखा करना चाहिए ।

धन, पुत्र, संसार में सम्मान, बडकपन में सच्चा सुख नही है । सच्चा सुख तो भगवान के चरणो में है । भगवान से जुडने में सच्चा सुख है । इस लिये भगवान के प्रति अतिशय लगाव रखे । तो उच्च सुख मिलेगा । भगवान के सामने संसार के पाँच विषयक सुख नगण्य है । इस लिये भगवान के प्रति प्रेम रखना चाहिए ।

धीरे-धीरे से संसार में वैराग्य मय बनकर भगवान की भक्ति करना चाहिए । तो संसार का सुख स्वतः छोटा लगने लगेगा ।

जो पुरुष घर में रहकर सभी कर्मो की ईश्वर को समर्पित कर देता है । हमारी कथा में समय व्यतीत करता है । उसे घर बंधन कारक नही होता है । (श्लोक संख्या-१९, अ. ३०, चतुर्थ स्कंध भागवत)

हमें यह महँगी मानव शरीर मिली है । इस लिये हरि की सेवा, सत्संग, भक्ति कर लेना चाहिए । शेष इस शरीर की सार्थकता ही क्या है ? कितना भी धन, सत्ता, मान-सम्मान मिले उससे क्या ?

यदि सुखी बनना है तो कामनाये कम कर देना चाहिए । किसी भी प्रकार की हो (धन, स्त्री, सम्पत्ति, जमीन दूसरी अन्य कामनाये) इच्छा न रखने वाला सदैव सुखी रहता है।

शेष तो ज्ञात है कि एक दिन सब कुछ छोड़कर चले जाना है।

जयश्री स्वामिनारायण ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूम्बर-२०२४)

१३ ५२वाँ प्राकट्योत्सव के अवसर पर परमकृपालु श्री नरनारायणदेवनी श्रृंगार आरती का दर्शन करके ठाकुरजी की रसोई तथा संत निवास का भूमि पूजन अपने करकमलो द्वारा न्यु निकोल नूतन मंदिर का भूमिपूजन विधिवत पूर्ण करके अक्सरोचित सभा के अंत में संतो हरिभक्तो द्वारा ५२ वें प्राकटोत्सवकी शुभेच्छा व्यक्त किये।

१७से२५ आस्ट्रेलीया में सीडनी और मेलबोर्न के संत मंडल के साथ अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर पर पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारे, सत्संग सभा तथा पधरामणी का कार्यक्रम हुआ।
न्युझीलैण्ड अपने आकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा में पधारे थे।

३१ श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा काली चौदश श्री हनुमानजी की पूजा-आरती करने के लिये पधारना। श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री हनुमानजी की पूजा-आरती करके समूह चोपडा पूजन अपने कर कमलो से पूर्ण किये।

(नवम्बर-२०२४)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर नये वर्ष का श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके अपनी बैठक में संतो-हरिभक्तोने नये वर्ष का दर्शन आशीर्वाद शुभेच्छा व्यक्त करके अन्नकूटोत्सव की आरती अपने करकमलो से किये थे।

५ गवाडा गाँव मे कोठारी परिवार द्वारा आयोजीत कथा पारायण के अवसर पर पधारना।

८ मोतीपुरा गाँव मे कथा के अवसर पर पधारना।

१२ प्रबोधिनी एकादशी को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर संत महादीक्षा अपने कर कमलो द्वारा पूर्ण किये।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर भक्तिनगर मेमनगर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सत्संग सभा मे पधार कर लोगो को आशीर्वाद दिये।

१७-१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडपर (कच्छ) गाँव मे मूर्ति प्रतिष्ठा अपने करकमलो से पूरा किये। सभा में सभी को आशीर्वाद देकर रामपर (कच्छ) गाँव मे कथा के लिये पधारे थे।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर आदीपर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूम्बर-२०२४)

१३ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ५२वे प्राकट्योत्सव के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेवनी आरती करके ठाकुरजी के ठाकुरजी के रसोई और संत निवास की भूमि पूजन किये। नये निकोल नूतन मंदिर का भूमिपूजन विधिवत रुप से किये। पू. महाराजश्री के ५२ वें प्राकटोत्सवकी सभा अपने सानिध्यमें पूर्ण किये।

१६ शरदोत्सव के अवसर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पर पधारना।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सत्संग सभा में पधारकर आशी र्वाद दिये।

१९ बावला श्री संस्कारधाम मंदिरना पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

२० श्री स्वामिनारायण बाग असारवा श्री विर हनुमानजीना पाटोत्सव पर पधारना तथा दर्शन करना।

(नवम्बर-२०२४)

१ अहमदाबाद कालुपुर मंदिर दीपोत्सव के अवसर पर पधारना।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के नये वर्ष पर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके बेठक मे संत-हरिभक्तो को दर्शन आशीर्वाद दिये अन्नकूटोत्सव की आरती अपने करकमलो से किये थे।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सत्संग सभा के अवसर पर पधारना।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुरा पाटोत्सव-शाकोत्सव के अवसर पर पधारना।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर श्री हनुमानजी महाराजनी प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आस्ट्रेलिया, न्यूजीलेण्ड धर्मप्रवास

- कोठारी शास्त्री मुनि स्वामी

आस्ट्रेलिया में अपने गुजरात, कच्छ प्रान्त के हजारो श्रीहरि के आश्रित अफ्रिका, यु.के. भारत से यहाँ आये। कई वर्षो से नौकरी-धंधा करके स्थायी हो गये है। अपने आराध्यदेव भगवान स्वामिनारायण की कृपा से, धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने संतो के विचरण से यहां पर निष्ठावालो और शुद्ध उपासना वाला सत्संग विकसित हुआ है। अपने प.पू. बड़े महाराजश्री जब गद्दी पर थे। तब से यहाँ पर नरनारायणदेव की नींव रखे थे। धर्मकुल के कभी-कभार विचरण से यहाँ के तमाम राज्यो में धीरे-धीरे अपने मंदिर बन रहे है। पू. महाराजश्री प्रत्येक वर्ष संत-पार्षद मंडल के साथ पधारकर यहाँ के सत्संग को पोषण देते है। अपने भुज मंदिर के प्रिय संत प्रतिवर्ष यहाँ पर सत्संग कथा वार्ता का लाभ देते है। कितना भी भौतिक सुख प्राप्त हो। यदि अपने परिवार में धर्म का संस्कार ना हो तो भविष्य की पीढी खराब हो जाती है। सुख-शांति नही मिलती है। जिससे अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री देश-विदेश में रहने वाले सत्संग परिवार की पीढी के लिये चिंतित रहते है। इस लिये पश्चिमी देशो में जाना पड़ता है। वहाँ पर अपने मंदिर, चैप्टरो, युवक बाल मंडल की स्थापना करते है। ऐसे सुंदर उद्देश्य से दि. १७ अक्टूबर से २५ अक्टूबर के मध्य सर्व प्रथम आस्ट्रेलिया धर्म प्रवास प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, अहमदाबाद मंदिर पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी, हजूरी पार्षद वनराज भगत के साथ आये थे। यहाँ पू. महाराजश्री के आज्ञा से अपने संत शा. स्वा. सुतस्वरुपदासजी, स्वा. भक्ति किशोरदासजी, शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी, स्वामी ब्रह्मदर्शनदासजी आदि संत यहाँ पर विचरण में थे।

दि. १८-१०-२०२४ से दि. २१-१०-२०२४ के मध्य अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर डेरीमेट (मेलबोर्न) के पाँचवे पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा उल्लास पूर्वक पूर्ण हुआ। पू. राम स्वामी कथा-वार्ता के माध्यम से हरि भक्तो को खुश किये थे।

यहाँ के सभी हरिभक्त कथामृत का पान करके धर्मकुल दर्शन आशीर्वाद के बाद ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन करके प्रसाद लेने पधारे थे। यहाँ के हरिभक्तो ने के यहाँ पधारकर और सत्संग सभा द्वारा पू. महंत स्वामी और संत मंडल ने सभी को प्रोत्साहित किया था। अन्त में पू. महाराजश्री सभी को श्रेय और मंगल हो और देव के प्रति निष्ठा रहे ऐसा मंगलमय आशीर्वाद दिये थे।

दि. २०-१०-२०२४ यहाँ के केसी (मेलबोर्न) में अपने नये श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमि पूजन प.पू. महाराजश्री के करमकलो द्वारा पूर्ण हुआ। यहाँ पर अपने कई हरिभक्त स्थायी रुप से रहते है। जिसे मंदिर की जरुरत थी। मंदिर हो जाने से भगवत भजन का हरिभक्त लाभ ले सकते है।

दि. २२-१०-२०२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोरोनिया (मेलबोर्न) प.पू. महाराजश्री पधारे थे। ठाकुरजी को आरती करके, सत्संग सभा में अपने संतो द्वारा कथा और अंत में पू. महाराजश्री सभी हरिभक्तो को देव के प्रति निष्ठा बढे ऐसा आशीर्वाद दिये थे। यहाँ पर सत्संग अधिक विस्तार किया है।

दि. २३-१०-२०२४ को अपने सर्व प्रथम मंदिर सीडनी ब्लैकटाउन में स्थापित करके निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर दर्शन करके सत्संग सभा में पू. राम स्वामी, पू. सुव्रत स्वामी और पू. महंत स्वामी ने अधिक सत्संग को बल मिले। ऐसा प्रेरक आशीर्वाद दिये थे। अन्त में पूज्य महाराजश्री ने यहाँ के सभी हरिभक्तो को महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये थे।

दि. २४-१०-२०२४ को श्री स्वामिनारायण मंदिर किंग्सपार्क सीडनी में पधारकर सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती किये थे। दर्शन करके सभा में पधारे थे। पू. राम स्वामी, पू. महंत स्वामी और संत मंडल द्वारा हरिभक्तो ने बल और प्रेरणा मिले ऐसा आशीर्वाद दिये थे। अंत में प.पू. महाराजश्री यहाँ का सत्संग अधिक प्रचार करे। तथा भावि पीढी में इस संस्कार का सिंचन हो। ऐसा आशीर्वाद दिये थे।

दि. २५-१०-२०२४ से २६-१०-२०२४ न्युजीलैण्ड आकलैण्ड में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर पधारे थे। निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके भव्य नूतन स्वामिनारायण काम्पलेक्स सभा में अपने संत पू. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, पू. राम स्वामी, शा. स्वा. धर्मकिशोरदासजी और स्वामी रामानुजदासजी आदि संत मंडल कथा-वार्ता के माध्यम से हरिभक्तो को अधिक खुश किये। प.पू. महाराजश्री अपने आकलैण्ड मंदिर के प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल और सेवा देने वाले सभी हरिभक्तो के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे। यहाँ पर सत्संग का अच्छा विकास हुआ है। सभी हरिभक्तो को देव के प्रति निष्ठा अधिक है। जिससे सभी लोग सुखी है।

श्रीहरि के सातवे और आठवे वंशज के मुख से अमृतबचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

प.पू. महाराजश्री, पूनम सत्संग सभा, कालुपुर मंदिर ता. १७-१०-२०२४ : वह भाग्यशाली है जो भगवान के चरणो में रह सकते है । ऐसा कहा भी जाता है । तथा शास्त्रो में लिखा भी है कि मरने के बाद आठ आवरण कष्ट देते है । पृथ्वी के उपर ८००० आवरण है । यह कहे तो कम ही है । अन्त का ज्ञान नही है । मनुष्य मन के उपर नियंत्रण रहे ऐसा समय नही है । आप घर से निकले, कुछ लोग गाँव से आये होते बोर्ड तो देखे ही होगे । कई तरह का प्रचार रहता है । यह सब दिमाग में जाता है । शेष टी.वी. एवं मोबाईल तो है की । यह मानव के लिये छोटे आवरण है ।

विशेष आवरण वचनामृत में महाराजने स्वभाव के आवरण की बात कहे है । स्वभाव के आवरण को दूर करना कठिन है । संतो ने पूछा ? स्वभाव से शायद मानव स्वभाव बदल सकता है । शायद शब्द बडी बात है । हम सभी स्वभाव के आधीन है । भगवान अकेले स्वभाव से परे है । यह बात इसलिये कह रहा हूँ । लम्बा नही करना है । लेकिन आज इस परिवार ने लाभ उठाया है । अपनी भाषा में कहूँ तो वल्लभ बापा पुराने जोगी है । जिन्होने ने जीवन में नरनारायणदेव के सीढी के अलावा दूसरी जगह नही मिले है । सत्संग में ऐसी निष्ठा सदैव बनी रहे । उनका परिवार आज भी बनाकर रखा है । और बनाकर रखेगे भी । वह हम लोगो के लिये बडी समृद्धि है । समृद्धि किसे कहते है ? सब कुछ नाशवृत है । पैसा, गाडी, बंगला यह समृद्धि है । लेकिन मनुष्य मानता नही है । इतनी जमीन है । इतनी जमीन है । इतनी जगह है । दो मकान है । दो चार अभी लेना है । पार आना है । शेष भगवान के चरणो में रहकर समृद्धि प्राप्त कर सकते है । यह वास्तविकता है ।

बुजुर्ग पूरे जीवन भर भगवान की भक्ति में रहेगे । आज भगवान के चरण में है । ऐसे वृद्धो पर हमे गर्व होता है । इनसे प्रेरणा लेना चाहिए । महाराज और नंद संतो ने भी बताया है । पहले के जो भक्त हुए है । और जो आज के भक्त है । जो भगवान के बनकर रहे है । इससे बड़ी कोई प्राप्ति नही है ।

पहले ही वचनामृत में भगवानने कहा है कि कठिन से कठिन साधन क्या है ? तो भगवान की मूर्ति में अखंड वृत्ति रखना कठिन कार्य है । पहले वचनामृत का पालन करने के लिये २७३ में से शेष २७२ है । महाराज वही से प्रारम्भ किये है । क्या करने से अंत में धाम में जा सकते है । भगवान का बनना आज के समय में कठिन कार्य है । हमें कई आवरण पार करने पडेगे । आप सभी भाग्यशाली है जो आकर यहाँ पर बैठे है । कोई बिमार हो, कमजोर हो । पूनम और एकादशी के दिन कभी भी आकर दर्शन कर जाये । वह देव का रहता है । इससे बडी कोई उपलब्धि नही है । यह बडी बात है । कठोर से कठोर है ।

आचार्य का हो जाये, साधु के हो जाये, कोई हरि का हो जाये । पर भगवान का कौन बनता है ? यह महत्वपूर्ण बात है । भगवान का बनना अति महत्वपूर्ण बात है । ऐसा कहे कि हम आचार्य आज्ञा में रहना चाहिए । कृपया मत रहे, दया करे कही पर नही लिखा है । केवल देव के आधीन रहने का है । हमे भी देव की आज्ञा में रहना है । देव की आज्ञा में हमारी आज्ञा है । उनके उपर देव, आचार्य, संत सभी खुश होगे हरिभक्त आपस में प्रेम से रहेगे ।

महाराजने छोटी शिक्षापत्री लिखे है । मूल तो महाराज की २१२ श्लोक की है । २१२ मे से हम लोगो के हिस्से में कितनी आती है ? मात्र २५% आती है । साधु, आचार्य, सधवा, विधवा इत्यादि के सभी के धर्म को अलग करे तो शेष क्या बचता है ? इसमें कठिनाई आती है । यह मैं नकारात्मक रुप में नही कह रहा हूँ । कभी किसी को शिक्षापत्री बडी पडती है । कुछ को छोटी पडती है । इतना ही पालन करना है । इतना पालन करके कुछ नया खडा कर देते है ? महाराजने जितनी आज्ञाये लिखे है । उतना पालन करे तो सबसे अचछी बात है । उससे कम या अधिक करना ठीक नही है । १००% आज्ञा का पालन करना चाहिए । लगभग ९०% तक तो जा सकते है । कोई स्वभाव से बडे नही होता है ।

महाराजने कहा है कि, हरिभक्तो के अवगुण ग्रहण नही के । कोई दर्शन करने धक्क ा मारे तो क्या करे ? वैसे भी धक्क ा तो लगता ही है । आज हम आये है । हरिभक्त खडे थे । सुरक्षा वाला सीटी बजा रहा था । भाई सीटी मत मारो । सभी को ज्ञात है । नही पता हो तो भी पडा नही करना है । यहाँ पर हम सीटी बजवाने आते है । दर्शन करने आते है । बहने भी कम नही है । जिसके - जिसके ऐसा बोल कर दूसरे को धक्क ा देती है । दोनो पक्ष को कह रहा हूँ । यहाँ पर शोर करने से अच्छा मान सम्मान देकर भगत से कहे थोडा खिसक जाये ? दर्शन करने देगे ? ऐसा बोलने पर सुनने वाले को अच्छा लगेगा । विवेक-बुद्दि की बात महाराज ने वचनामृत में लिखे है । जीवन में दो बाते महत्वपूर्ण है । विवेक बुद्धि और समय को सम्मान देना ।

विवेक बुद्धि में क्या, कब, किसके सामने कितना बोलना, किसके साथ कितना बोलना है । यह सब महाराज ने बताया है । दर्शन कैसे करना है । इसमें आ जाता है । विवेक आने पर सुख दुःख नही आता है । भोजन की लाईन हो । उत्सव समैया हो उस समय अधिक कष्ट मिलता है । अपने माफिक नही होता है । बड़े लोगो को आगे बढाने से समय सूचकता दिखाई देती है । यह मानवता है । यह हम लोगो में है । यह कुछ हम सभी में है । शेष दूसरे स्थान पर परोक्ष में झपट्टा भारना वहार निकले, पर्दे गिरा देना । अपने मंदिर में सुबह से शाम तक बैठे । भजन भक्ति करे । कोई आप को नही उठायेगा । बहनो को भी कोई डिस्टर्ब नही करता है । इस तरह की परंम्परा महाराजने डाला है । इसकी शुरुआत यही से हुई है ।

आप सभी सद्धर गाँवो से यहाँ पर आये है । और आते रहना । क्योकि भगवान के बिना अपना कल्याण नही है । मैं ऐसा मानता हूँ । यह संस्कार सभी बच्चे-बच्चियो को देना है कि देव के अलावा अपना कोई नही है । इससे समझदारी दृढ होगी । तब मंदिर की सीढीयो पर चढना सार्थक होगा ।

खीचडिया बापा, बापजी के मित्र थे । छोटेपन से उन्हे जानता हूँ । उनकी अधिक कहानियाँ है । उसे नही कहते है । वह परिवार आज लाभ लिया । सत्संग से हम सभी जुडे है । इस लिये छोटे से छोटे हरिभक्त की पहचानते है ।

शेष अन्य जगह हम देखते है कि कोई किसी को जानता नही है। सत्संगि परिवार दुनिया में कही पर भी है। उनकी चिंता अपने हरिभक्त करते है। संत करते है। और हम है। इसलिये हम विदेशो में जाते है। आस्ट्रेलिया जाते है। वहाँ धुमने नही जाते है। लंदन दो सौ बार गये है। लेकिन किंगडम पैलेस नही देखे है। मंदिर के अलावा हमे कुछ देखना ही नही है। हरिभक्तो के अलावा किसी से मिलते भी नही है। क्योंकि यही अपनी पूँजी है।

सत्संगि के बच्चो का संस्कार युक्त पोषण हो। इस लिये धुमते है। इस में आप सभी का सहयोग मिलता है। बुर्जुगो ने जो दिया है। उसे सुरक्षित रखना है। यह बल महाराज सभी को दे यही हमारी उनसे प्रार्थना है।

प.पू. लालजी महाराजश्री : प्रत्येक पूनम को इतनी अधिक संख्या में हरिभक्त गाँवो से शहेर से और विदेश से देव के दर्शन के लिये। अपने जीवन के कल्याण के लिये मंदिर पर आते है। उस समय दो घडी भगवान के नाम का स्मरण करते है। साथ ही साथ महाराज ४९ वर्ष तक पृथ्वी उपर रहे। उस समय कई लीला-चरित्र किये। कई लोगो का अधर्म के मार्ग पर से धर्म के मार्ग पर लाये थे। कथा-वार्ता के माध्यम से कोई ऐसी बात जीवन में उतारे। जो वर्षो तक याद रहे। इससे अपने जीवन का कल्याण कर सकते है। जीवन अपना सुधार सकते है। भगवान की कृपा से हमें मानव जीवन प्राप्त हुए है। जीवन के साथ ही साथ जीवन कैसे बिताये प्रभुने समझ दी है। सत्संगि बनाने से पहले महाराज हम सभी को मानव बनना सिखाये है। मनुष्य कैसे बने ? सर्व प्रथम मानवता सिखाये है। स्वामिनारायण भगवान ने पहले मंदिर नही बनाये थे। सर्व प्रथम अन्नक्षेत्र बनाये थे। गरीबो को भोजन करवाये थे। छोटे से छोटा हरिभक्त हो। छोटे से छोटा जीव हो। वह किसी प्रकार से दुःखी नही हो। अपने आश्रितो के लिये रामानंद स्वामी के पास अन्न-धन वस्त्र के सुख का वरदान माँग लिये है।

महाराज ने हम सभी को अनेक प्रकार से हित किये है। इस तरह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम सत्संग के लिये क्या कर सकते है ? क्या कर रहे है। यह प्रश्न अपने को देखकर करना है। हरि मंदिर हो या शिखरबद्ध मंदिर हमारे द्वारा कुछ ऐसा कार्य हो जिससे भगवान से जुड सके। हमारे सभी लोग भगवान से जुडे। जहाँ पर जो संत और भक्त बैठे है ये सभी देव के है। देव के प्रति निष्ठावान है। सभी के अंदर भगवान बिराजमान है। भगवान हम सभी को शक्ति देते है। सक्षम है। इस लिये सत्संग में सेवा दे सकते है। यह सेवा मात्र पैसे की बात नही है। समय देने की बात नही है। बालक हो या वृद्ध हो कोई व्यक्ति भगवान के प्रति जुडे। वह सबसे बडी सेवा है।

इस समय पूर्व क्षेत्र में कई हरिभक्त है जो अपने पूरे परिवार के साथ आये है। हम कई वर्षो से देख रहे है। वहाँ का सत्संग निष्ठा तथा स्वाभिमान वाला है। सभी हरिभक्त सत्संग में भाग लेते है। भगवान के विषय में टापिक वाइज व्याख्यान माला में भाग लेगे। कथा चलती रहेगी। गाँव तथा शहर में दो दिन की शिबिर लगाना है। आप के क्षेत्र में जब शिबिर लगे तो लोग अधिक संख्या में भाग ले। पह हम आग्रह करते है।

आज के पूनम का लाभ लेने के लिये यजमान परिवार को विशेष धन्यवाद। महाराज आप सभी का अच्छा करे। ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम का नव स्थापना दिन

''फाल्गुन सुद-३'' श्री स्वामिनारायण के लिये दिपावली विशेष दिन है । कारण विश्वभर में स्वामिनारायण की यशोगाथा गायी जाती है । इसके जड़ अहमदाबाद कालुपुर में डाली गयी थी । यह अति पवित्र दिन है । कारण विश्व का सर्व प्रथम मंदिर उस दिन अस्तित्व में आया था । उस तिथि की महिमा समझ कर विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण म्यूजियम को भी स्थापना दिन पसंद किया गया था ।

सम्प्रदाय के शास्त्रो में श्री नरनारायणदेव प्रतिष्ठा दिन की महिमा अधिक कहा गया है । कालुपुर मंदिर में मनुष्यो का आगमन हुआ था । इसी दिन म्यूजियम की स्थापना हुई थी । म्यूजियम का महत्व प्रतिदिन बढ रहा है । यहाँ पर पैदल यात्रा करके आने वाले लोगो की मनौती पूर्ण होने के कई उदाहरण मिल रहे है । इस प्रकार श्रीजी द्वारा स्थापित नवधाम के बाद म्यूजियम को ० वे धाम के रुप में प्रसिद्ध होता जा रहा है । सम्प्रदाय के लिये दोनो अवसर अति महत्वपूर्ण होने के कारण दोनो अवसर पर जाने का मन करता है । लेकिन १३ वर्ष का अनुभव हरिभक्तो को कष्ट पडता है । ऐसा हमको ज्ञात हो रहा है । हरिभक्त को छोटी से छोटी तकलीफ दूर करने के लिये तत्पर प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल द्वारा निर्णय लेना है ।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम की स्थापना दिन प्रति वर्ष दिनांक २९ मार्च के दिन मनाया जायेगा

इस दिन का चयन इसलिये किया गया है । उस दिन (इ.सं. १८२५) श्रीजी महाराज कुबेरदास छटीदार को (पावर आफ एटर्नी) दिये है । विश्व में एकमात्र श्रीहरि के हस्ताक्षर उस दिन सत्संग को मिला था । जो म्यूजियम के हाल नं. ८ में रखा गया है । श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में कहा है कि मेरी वाणी ही मेरा रुप है । इस कारण से उनका हस्ताक्षर भी उनका इस माना गया है । उस हस्ताक्षर के दिन को श्री स्वामिनारायण म्युजियम की स्थापना दिन के रुप में मनाने का निर्णय किया गया है । आशा है कि पूरा सत्संग समाज हर्ष से स्वीकार कर लेगा ।

संयोगानुसार उस पत्र का २०० वर्ष २०२५ में पूर्ण रो रहा है ।

श्री स्वामिनारायण म्युज़ियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची

(अक्टूम्बर-२०२४)

ता. १५-१०-२०२४ प.भ.श्री गौतमभाई ठक्कर – मणीनगर, अहमदाबाद।
ता. २६-१०-२०२४ प.भ.श्री रणछोडभाई कोदरभाई पटेल – हिंमतनगर।
ता. २७-१०-२०२४ प.भ.श्री हार्दिक नरेन्द्रभाई पटेल – मेघाणीनगर।

(नवम्बर-२०२४)

ता. ०३-११-२०२४ प.भ.श्री हरजीवनदास करशनदास पटेल – कडी – ह. डॉ. घनश्यामभाई हरजीवनदास पटेल (धरमपुरवाले)।
ता. ०६-११-२०२४ प.भ.श्री डॉ. सतीषभाई शाह।
ता. ०८-११-२०२४ प.भ.श्री मनीष हालाई, मिनेष भूडीया, निखिल खेताणी, देव, दर्शन भंडेरी, दिल्लान पटेल तथा करीना भीखा।
ता. १०-११-२०२४ प.भ.श्री गौतमभाई कांतिभाई पटेल – डांगरवावाला – हाल यु.एस.ए.।
ता. १४-११-२०२४ प.भ.श्री हर्षदकुमार बाबुलाल पटेल – राजपुरवाला – हाल गांधीनगर।
ता. १५-११-२०२४ प.भ.श्री रंजनबेन शैलेषकुमार पटेल – राणीप।
ता. १६-११-२०२४ प.भ.श्री निलेषभाई तथा पारूलबेन पटेल – न्युजर्सी – यु.एस.ए.।
ता. २५-११-२०२४ प.भ.श्री प्राची निमित दोशी – अहमदाबाद – ह. संदिपभाई शेठ।
ता. २९-११-२०२४ प.भ.श्री नविनचंद्र गोविंदलाल पटेल – मोखासणवाला – हाल यु.एस.ए.।
ता. २९-११-२०२४ प.भ.श्री अरूणाबेन नविनचंद्र पटेल – मोखासणवाला – हाल यु.एस.ए.।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची

(अक्टूम्बर-२०२४)

रू।. १,००,०००/- प.भ.श्री डॉ. वसंतकुमार मनजीभाई वालु – अहमदाबाद।

(नवम्बर-२०२४)

रू।. ८४,५००/- प.भ.श्री नीतिन हिरजी वरसाणी – नारणपर (कच्छ-भुज)।
रू।. ५१,०००/- प.भ.श्री डाह्याभाई एन. पटेल (माणसावाला) – ह. श्रीमति विमलाबेन डी. पटेल।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "प्राप्त" और "प्रतीत" के मध्य अन्तर बनाये रखे

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

इतनी सभा में होती है । सत्संग होता है । यह सब क्या समझाने के लिये किया जाता है । दो वस्तु की समझ समाप्त नही हो उसके लिये सब कुछ है । दो वस्तु ? (१) 'प्राप्त' (२) प्रतीति जीव, ईश्वर और माया यह तीन वस्तु है । इसमें एक तरफ ईश्वर है । दूसरी तरफ माया है । बीच में जीव होता है । 'जीव' अर्थात् अपने 'इश्वर' भगवान और माया अर्थात् पूरा जगत होता है । इस लिये 'ईश्वर' - अर्थात् 'प्राप्त' और माया अर्थात् 'प्रतीति' है । एक प्राप्त है । दूसरा 'प्रतीति' है । प्रतीति वास्तव में सत्य नही है । लेकिन सत्य जैसा आभयन है । और प्रतीति होती है । और 'प्राप्त' परमात्मा है । जो 'प्राप्त' है वह सत्ता है । जिसके द्वारा पूरी पृथ्वी चलती है । यह हमे दिखाई नही देता है । इस लिये हम भूल जाते है । जो दिखायी देता है वह 'प्रतीति' मात्र ही है । क्षण मात्र है । हमें जो प्रतीत होता है । उसे सत्यमान लेते है । प्राप्त के प्रति लगे रहना है । इसे समझना अति सरल है । जो वस्तु स्थायी होती है । वह अखंड होती है । शाश्वत होता है । इसमें बदलाव नही होता है । जो परिवर्तित है वह अखंड नही होता है । इसे समझने के लिये एक उदाहरण लेते है । वृक्ष के उपर फल आता है । उससे पहले फूल आता है । बाद में कच्चा फूल आता है । बाद में पक जाता है । पुनः गिर जाता है । उसी प्रकार से माता के पेट में 'जीव' आता है । आकर प्राप्त करता है । उसमे परिवर्तन चलता रहता है । जन्म से लेकर मृत्यु तक वह बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था और वृद्धावस्था में बदलाव आता है । क्यो ? यह स्थायी नही रहने वाला है । स्थायी रहने पर बदलाव नही होता है । यह अंतर समझना है । इतना ही ज्ञान प्राप्त करना है । वास्तव हम 'शरीर' नही आत्मा है । और आत्मा 'शाश्वत' है । हम शरीर को शाश्वत मान लेते है । यही कष्ट देता है । शरीर के उपर अपना अधिकार नही है । यदि होता तो हम लोग वृद्धावस्था आने नही देते कोई रोग भी नही होने देते । इस शरीर के उपर अपना आधिपत्य नही चलता है । क्षण-क्षण में बदलाव होता है ? पल-पल शरीर से वियोग हो रहा है । बालक पैदा होता है । उसके बाद उसका जन्म दिन मनाते है । खुश होते है एक वर्ष का हो गया । शरीर की वृद्धि होती है । एक वर्ष उसका पूरा हो गया । शरीर के संयोग वियोगी स्वभाव का है । यह इसी लिये बदलता है । इसे हम स्थायी समझते है । यह सत्ता रुप है । नित्य है । 'प्राप्त' है । उसे अप्राप्त समझ लेते है । यह बारीक समझ है । इसे समझने के लिये हमेशा सत्संग करना पडता है । यदि नही करे तो समझ टूट जाती है । सब ज्ञान समाप्त हो जाता है । ज्ञान उपर 'मायारुपी' आवरण आ जाता है । शीसे की गिलास हो उसमें दूध भरा रहे लेकिन टूट जाने पर दूध गिर जाता है । तो लगता है । दूध पुनः इकठ्ठा कर ले । तो क्या सम्भव है ? प्राप्त और प्रतीति यह दो के बीच समझ ही है । यह जाने पर ज्ञान समाप्त हो जाता है । जीव सीसे के समान होता है । इसकी रक्षा करना पडता है । सावधानी होने पर सीसे की तरह टूट जाता है । ज्ञान जाने पर ईश्वर चले जाते है । क्योकि ज्ञान द्वारा ईश्वर मिल सकते है । ज्ञान न रहने पर ईश्वर भी नही रहते है । और जो वस्तु नष्ट होने वाली है । वह नित्य नही है । उसकी चिंता करने से हमारे

हाथ में कुछ नही आता है। जीवन का पूरा श्रम बेकार हो जाता है। ज्ञान रहने पर भगवान का चिंतन कर सकते है। और भगवान कितने दयालु है। जब जीवन में विपरीत समय आता है। तब ज्ञात होता है। कई बार जीवन में ऐसा लगता है कि ईश्वर ने मदद नही की होती तो कैसे बेडा पार होता। मै इसमे से पार नही हो सकता था। भगवानने बाहर निकाला हो ऐसा अनुभव कभी न कभी सभी को हुआ होगा। इतना अच्छा सत्संग मिला है। यह सब छोकर भगवान का चिंतन करना चाहिए। इससे बेडा पार हो जायेगा।

•

बाल संस्कार

– ठक्कर वीणाबेन नरेन्द्रभाई (बोपल)

मानव जीवन की तीन अवस्था है। बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था होती है।

बाल्यावस्था यह विकसित होने की अदम्य ईच्छा से पूर्ण फूल के कली समान होता है। वह कली संस्कार युक्त पोषण माँगती है। छोटे बच्चे में भगवान जैसी निर्दोषता, निखालसता, सहजता, सरलता, निर्मलता इत्यादि गुणो का दर्शन होता है।

युवावस्था पूर्ण खीले फूल की अवस्था होती है। युवा अवस्था में कार्य करने की क्षमता बुद्धि शक्ति, ध्येय सिद्धि इत्यादि होती है।

वृद्धावस्था मुरझाये पुष्प की अवस्था है। वच्चे को बाल्यावस्था में दिया गया समय माता-पिता की वृद्धावस्था को सुधारता है। छोटा बच्चा अनुकरण करता है। अपने शास्त्र में गर्भ संस्कार की बात कही गयी है। अर्जुन का पुत्र अभिमन्य माँके गर्भ में प्रभु भक्ति का संस्कार सीखे थे। बालक शिवाजी पालने में जीजाबाई से कहानी सुनकर रामायण-भागवत का संस्कार पाये थे। महाराज स्वयं कारियाणी के तीसरे वचनामृत में कहते है कि "अच्छा हो वह बालपन में दिखाई देता है।" जब बच्चा छोटा होता है। तभी से उसके गुण, रुचि स्वभाव, व्यवहार पहचान कर बालक के भविष्य को उज्जवल बनाया जा सकता है। इस प्रकार बालक को अंधकार में से प्रकाश की तरफ असत्य से सत्य की तरफ लाया जा सकता है।

यह मँहगा मनुष्य शरीर मिला है। संसार का विकास भी मानव द्वारा होता है। इस लिये सत्संग में चलने वाले बाल मंडल युवक मंडल, युवति मंडल सत्संग शिबिर के द्वारा जीवन का विकास होता है। सत्संग से जुडने पर अच्छा मार्ग मिलता है। लधुता ग्रंथि दूर होती है। हजारो युवक-युवति अच्छे मार्ग पर चलकर विकास करते है।

आज के विद्यालय संसार की शिक्षा देते है। लेकिन संस्कार-सत्संग की सेवा में जुडने से मिलता है। समाज परिवार के लिये पोषण रुप बनता है। खराब आदते समाप्त होती है। उन्तर में उर्मि विकसित होती है। जीवन वनपलवित हो उठता है।

घनश्याम महाराज बालको के आदर्श है। प्रतिदिन देव दर्शन हेतु मंदिर में जाये। कथा सुनाने, शास्त्र का अध्ययन करना बाल प्रभु घनश्याम महाराज की आदत थी। बाल प्रभु घनश्याम महाराज की एक दिन धर्मदादा ने वृत्ति की परीक्षा ली थी। शस्त्र शास्त्र यह लीली बच्चो को शास्त्र पढने के लिये प्रेरित करती है। हर बच्चे को संस्कार की प्रेरणा मिलती है।

आज के आधुनिक युग में टी.वी. मोबाईल, देखा देखी, फैशन, व्यसन आदि समस्या के मध्य संस्कार का विशेष प्रश्न है।

•

"आइये भगवान के प्रति स्नेह रखे"

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

कलियुग में भगवान को खुश करने के लिये भक्ति का मार्ग सर्वोत्तम माना जाता है । सामान्य लोग भगवान के सामने दीपक जलाना, पुष्प की माला चढाना थाल रखना, आरती करना इतनाही समझते है । लेकिन नारद मुनिने कहा है कि वह भक्ति प्रेम रुपा है । जिस में भगवान के प्रति गहरा प्रेम हो । भगवान का चिंतन हो । सभी प्रकार की उपासना हो । वह भक्ति कहलाती है । भगवान के प्रति स्नेह रहे । ऐसा सच्चा भक्त कभी भगवान से कुछ मांगता नही है । क्योकि उसे दृढ विश्वास होता है कि भगवान योग्य समय पर योग्य वस्तु प्रदान करते है ॥ भक्त भगवान से भक्ति के अलावा कुछ माँगता नही है । मात्र भगावन को हृदय में धारण करने की इच्छा रखता है । भगवान जिस अवस्था में रखे । वह उसी अवस्था में खुश रहता है । शास्त्र बताता है कि अनन्य भक्ति से भगवान मिलाते है । भगवान मात्र भक्त को भक्ति से समझते है । जिसने भक्ति मार्ग को चुना है । वह भक्ति मार्ग का अनुसरण करता है । वह परम भाग्यशाली है । क्योकि हजारो जन्मो का तप, दान और समाधि करने पर पाप का क्षय होता है । तब भगवान में भक्ति आती है । भगवान श्री स्वामिनारायण प्रगट पुरुषोत्तम है । और स्वयं की प्रस्थापित मूर्तियो में आचार्यश्री मे सतशास्त्रो में साक्षात बिराजते है । इनके प्रति कैसी भक्ति करे । वह सद्‌गुरु निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित स्नेहगीत सरल समझाये है ।

भक्ति करने वाला अपने भगवान के उपर स्नेह करता है । भक्ति रावण भी करता था । वह जहाँ पर जाता था । सोने का शिवलिंग रखकर पूजा करता था । शिव के सामने नृत्य भी करता था । यह भक्ति वह सत्ता तथा भोग करने के लिये करता था । उसे भगवान के प्रति स्नेह नही था । इस स्नेह की तुलना में जप, तप, तीरथ, यश, दान, पुण्य और नवधा भक्ति का मूल्य भगावन श्री स्वामिनारायण के प्रति स्नेह से कम माना जाता है ।

''जप तीरथ जोग यज्ञ स्नेह समान नव देखियु, दान, पुण्य ने व्रत विधि करे, भक्ति नवधा कोय, स्नेह बिना सरवे सुनु जेम भोजन धृत वीण होय ।

भगवान के प्रति ऐसा सच्चा विना भक्ति के पानी बिना सरोवर जैसा, सुगंध वगैर फूल, स्नेह बिना हृदय निरर्थक है । अगन पक्षी जमीन से सीधे आकाश की तरफ उडता है । मधुर आवाज करता है । पुनः जमीन पर पुनः अपने घोसले मे आ जाता है । उसी प्रकार भगवान श्री स्वामिनारायण दंभी व्यक्ति के ऊँचाई को नही देते है । वह फिर माया जाल में फँस जाता है ।

सच्चे स्नेह होने पर सत्संगि पल पल परमात्मा की खोज में खोया रहता है । एक दिन कृष्ण भगवान बाल धोकर कृष्ण की जंघा पर सिर रखकर सोये थे । तभी रुक्ष्मणी ने कृष्ण से प्रश्न किया । ''आप अर्जुन के प्रति इतना स्नेह क्यो रखते है ।'' श्रीकृष्णने रुक्ष्मणी से कहा कि अर्जन के बाल के पास कान रखे । उस समय अर्जुन के बाल से लगातार ''श्रीकृष्ण शरणं मम'' मंत्र सुनाई दे रहा था । गोपियाँ भी प्रेममयी भक्ति भगवान के लिये करती थी ।

इस लिये आज भी गोपियो को कीर्ति गान होता है।

"भूत भविष्य वर्तमान मे
कोई ए स्नेह तुल्य नथी आवतुं,
निष्कुलानंदना नाथजी
स्नेह विना नथी भावतु ।"

श्रीजी महाराज के प्रति इतना तीव्र प्रेम जिसके हृदय में होती है । उसके उपर श्रीजी महाराज खुश होते है । पूजा और भक्ति में मात्र बाहरी दिखावट और दम्भ से श्रीजी महाराज प्रसन्न नही होते है ।

અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં શ્રી નરનારાયણદેવ આદિ દેવોના અદ્યતન રસોડાનું ખાત મુર્હૂત પ્રસંગે શ્રી હરિના ત્રણેય અપર સ્વરૂપો

ન્યૂ નિકોલ નૂતન મંદિરનું ખાત મુર્હૂત કરતા
પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

અમદાવાદ મંદિરમાં પ્રબોધિની એકાદશીએ પોતાના વરદ્ હસ્તે
સંત મહા દીક્ષા આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

અમદાવાદ મંદિરમાં દિપોત્સવ પ્રસંગે ઠાકરોજીની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી તથા કાલુપુર મંદિરમાં દિવાળીમાં ભવ્ય સજાવટ

અન્નકૂટ

ચોપડા પૂજન

અમદાવાદ મંદિરમાં

હાટડી ઉત્સવ

પૂનમ સભા

ઉત્સવ

દિવાળી ઉત્સવો

રંગ મહોલ પાટોત્સવ

શરદ પૂનમ

અસારવા ગુરૂકુળ વીર હનુમાનજીના પાટોત્સવ પ્રસંગે મારૂતિયજ્ઞમાં પૂજા કરતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી
તથા યજમાનોનું અભિવાદન કરતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

બાવળા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની અન્નકૂટ
આરતી ઉતારતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

અમદાવાદ મંદિરમાં શ્રી વ્રજેન્દ્રભુવનમાં સંતો માટે
નૂતન લીફટનુંઉદ્‌ઘાટન કરતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી

મહેસાણા મંદિરમાં ખીચડી ઉત્સવ અને સત્સંગ સભા અંતર્ગત
સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

મુબારકપુરામાં પોતાના વરદ્ હસ્તે શાકોત્સવ કરતા
પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

જેતલપુર મંદિરમાં સમૂહ મહાપૂજામાં લાભ લેતા હરિભક્તો

પ્રયાગ મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીના અભિષેક દર્શન

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से पूरे धर्मकुल के करकमलो द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री के 52 वे प्रगटोत्सव के दिन मूहुर्त किया गया था।

श्री नरनारायणदेव आदि देवो के अद्यतन रसोई का काम पूरे शीघ्रता से चालु है।

सहयोग के लिये सम्पर्क करे

For Donation

Account Holder

Shree Swaminarayan Mandir Trust

Bank: State Bank Of India
Branch : Navrangpura, Ahmedabad
A/C No. 62303101798
IFSC Code : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

श्री नरनारायणदेव की रसोई संत निवास निर्माण कार्य में सेवा का अवसर

विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से उपरोक्त ठाकुरजी का अद्यतन सुंदर रसोई एवम् संत निवास का कार्य तेजी से चल रहा है। आप सभी श्रीहरि के आश्रित ऐसे महा भगीरथ सेवा यज्ञ में अहमदाबाद शहर और गाँव से आप सभी भक्त अनुदान सेवा देते ही है। उसी प्रकार देते रहियेगा। आप सभी के सेवा की अहमदाबाद मंदिर के कोठार आफिस से पक्की रसीद शीघ्र मिल जायेगी।(कोठारी स्वामी)

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्रीमद् सत्संगि भूषण पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, परमपूज्य बड़े महाराजश्री, परमपूज्य लालजी महाराजश्री, प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गाद्दीवालाश्री और पू.श्रीराजा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पूज्य महंत स.गु. पुराणी स्वामी धर्मनंदनदासजी (भुज) और पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से सहजानंद कन्स्ट्रकश्न कां. परिवार (मांडवी-कच्छ) के यजमान पद से ता. ६-१०-२०२४ से ता. १०-१०-२०२४ के मध्य श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में प्रसादी के मंडप में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट), स.गु. शा. स्वामी भक्तवत्सलदासजी (भुज) के वक्ता पद से पूर्ण हुई । कथा के मध्य धर्मकुल आकर यजमान परिवारने आशीर्वाद दिये था । अहमदाबाद मंदिर के पूज्य मंहत स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार पू. मुनि स्वामी, पू. जे.पी. स्वामी, पू. बालु स्वामी, और पू. भंडारी स्वामी ने सुंदर व्यवस्था किये थे । कच्छ-भुज के संत-हरिभक्तो ने खुश किया । इसके बाद यजमान परिवार ने आशीर्वाद दिये थे । पूरे प्रसंग में कथा का सुंदर संचालन पूज्य मुनि स्वामी ने सुंदर किये थे ।(कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ५० वाँ प्रगटोत्सव कालुपुर मंदिर ठाकुरजी की रसोई संत निवास तथा न्युनिकोल मंदिर में भूमि पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के संकल्प से इस समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ५२ वे प्रगटोत्सव अहमदाबाद पोस विस्तार न्यु निकोल में अपने श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत भव्य नूतन मंदिर का भूमि पूजन पश्चात सौरा ट्र पटेल समाज वाडी में सुंदर आयोजन पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन और पूज्य राम स्वामी द्वारा पूर्ण किया गया ।

आश्विन सुद-१० ता. १३-१०-२०२४ रविवार के दिन प्रातः ८-०५ बजे प.पू. महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और पू. लालजी महाराजश्री श्री नरनारायणदेव आदि देवो की श्रृंगार आरती उतारकर दर्शन करके कालुपुर मंदिर में नूतन भव्य अद्यतन ठाकोरजी की रसोई और संत निवासका भूमि पूजन पूरे धर्मकुल के करकमलो द्वारा पूर्ण किया गया था । इसके बाद फिर न्यु निकोल आये थे । जहाँ पर हजारो हरिभक्तो-संतो की हाजिरी में अपने श्री नरनारायणदेव के अर्न्तगत भव्य हरि मंदरि को अच्छे रुप प.पू. महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा भूमि पूजन पूर्ण किया गया ।

प्रसंगोचित सभा में पू. महंत स्वामी और विद्वान संतो प.पू. महाराजश्री अपनी शुभेच्छा भेजे थे । प.भ. मगनभाई शयाणी को सम्मान पत्र देकर प.पू. महाराजश्री और पूरे धर्मकुल का सम्मान करके उनकी सेवाको याद किया गया था । अंत में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपोने आशीर्वाद दिया था ।

पूरे अवसर का संचालन पू. राम स्वामी और पूज्य मुनि स्वामीने शोभा बढाया था । पूरा आयोजन अपने पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से अपने संत हरिभक्त की टीम अच्छे से कार्य किये थे । ५२ वे प्रगटोत्सव एप्रोच, हर्षद कोलोनी, निकोल गाम, कर्म शक्ति पार्क, आदिश्वर नगर, नरोडा आदि पूरे सत्संग समाज के सहयोग से पूर्ण हुआ था । धामो-धाम से आये संत-हरिभक्त ५२ वे प्रगटोत्सव को देखकर धन्य हुए ।(शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

अहमदाबाद मंदिर में भव्य शरदोत्सव मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर आश्विन सुद-१५ शरद पूर्णिमा को ता. १६-१०-२०२४ दिन बुधवार के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गाय था । पू. मुनि स्वामी के सुझ-बुझ और प्रेरणा से अपने मंदिर के चौक में रोशनी और सुंदर मंडप सजाया गया था । इस समय पर वर्षा भी हुई थी । शरदोत्सव

उल्लास पूर्वक मनाया गया था। ओच्छव मंडल ने सुंदर ओच्छव किये थे। रास-गरबा भी किया गया था। पूर्णाहुति की आरती के पश्चात सभी भक्तोने दूध-केसर, इलायची, शक्कर युक्त दूध पौवा का प्रसाद दिया गया था। (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदरि कालुपुर में आश्विन सुद-१५ की सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से काफी समय से प्रत्येक पूनम को कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धर्मकुल के सानिध्य में नियमित सत्संग सभा होती है। आश्विन सुद-१५ ता. १७-१०-२०२४ गुरुवार को प्रसादी के सभा मंडप में परमपूज्य लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में अ.नि. वल्लभभाई पोपटभाई खीचडीया, अ.नि. जवलबेन वल्लभभाई खीचडीया परिवार - ह. प.भ. नारणभाई, प.भ. रमेशभाई, प.भ. महेन्द्रभाई, चि. उमंग, कीर्तन, अभिषेक, पूजन, शेलजा गाम ईंगोराणा (डांड) हाल अहदाबादा के यजमान पद से की गयी थी। सत्संग सभा के वक्ता स.गु. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (एप्रोच मंदिर) में सुंदर कथामृत का पान कराते थे।

श्री स्वामिनारायण मंदरि कालुपुर में काली चौदश को श्री हनुमान जीक पूजा और समूह चोपडा पूजन

विश्व का प्रथम मंदिर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में आश्विन वद-१४ ता. ३१-१०-२०२४ गुरुवार के दिन शाम को ६ बजे श्री हनुमानजी महाराज का पूजन अर्चन आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा हुई थी। इस अवसर पर शहर के कई हरिभक्त ने दादा का दर्शन करके अलौकिक लाभ लिये थे। दादा को अनेक प्रकार के भोजन का अन्नकूट बनाया गया था।

समूह शारदा पूजन

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के सानिध्यमें प्रसादी के सभा मंडप में ता. ३१-१०-२०२४ को शायं ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा समूह शारदा पूजन-चोपडा पूजन मंदिर के गोर द्वारा विधिपूर्वक पूर्ण किया गया था। आज के तकनीकी युग में भी ९०० सौ से अधिक व्यापारी अपने धंधा मे प्रयोग आने वाले का सुंदर पूजन करवाये थे। पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी इसका अच्छा प्रबन्ध किये थे। (शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

विश्व के सर्व प्रथम मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में भव्य दीपोत्सव

भरतखंड के राजाधिराज सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के अलौकिक सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्यम हाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से आश्विन सुद-३० ता. १-११-२०२४ शुक्रवार को दीपोत्सव के मंगलमय दिन पर विश्व के सर्व प्रथम महामंदरि कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रसादी के चौक में मंदिर के चारो तरफ रंगीन दीपक जलाया गया था। सभा मंडप, हवेली निज मंदिर, मुख्य प्रवेश द्वार के उपर तो मल्टीकलर प्रकाश की व्यवस्था थी। यह कार्य प्रफुल खरसाणी के देखरेख में किया गया था। पूज्य महंत स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन के अनुसार पूज्य कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी का सुंदर प्रबन्ध और सूझ-बूझ से प्रिय सेवा भावी हरिभक्त श्री रणजीतसिंह और युवा हरिभक्त प्रेरक कार्य किये थे। इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री भी आये थे। अपने करकमलो द्वारा आरती उतार कर दीपोत्सव मनाये थे।

अहमदाबाद मंदिर में अन्नकूटोत्सव

संवत २०८१ कार्तिक सुद-१ ता. २-११-२०२४ शनिवार को नूतन वर्ष प्रात: १० बजे विश्व का सर्व प्रथम ऐसा महामंदिर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री नरनारायणादि देवो को छप्पन भोग का अन्कूट की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और परमपूज्य लालजी महाराजश्री ने उतारी थी।

शहर और गाँव से हजारो भक्तगण शायं ४ बजे तक भीड के बीच दर्शन करके नये वर्ष को हर्षोल्लास से मनाये थे।

आज प्रात: ५-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रतिवर्ष की तरह श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती उतारे थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री अपनी बैठक में हजारो हरिभक्तो को दर्शन देकर नये वर्ष को अन्त:करण से आशीर्वाद दिये थे। पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से पूर्व के १५ दिन से अन्नकूट सेवा में कार्यकर्ता पू. जे.पी. स्वामी, पू. भंडारी स्वामी, पू. बालु स्वामी, पू. नटु स्वामी, पू. भक्ति स्वामी आदि संत पार्षद मंडल और

हरिभक्तो ने अन्नकूट बनवाया, ठाकुरजी के लिये तैयार पदार्थ को व्यवस्थित करना बोक्स को भरना तता उसे मेहनतपूर्वक तैयार किये थे । पू. महंत स्वामी प्रत्येक संतो को प्रोत्साहित कर रहे थए ।

बीते २० दिनो से पूरे मंदिर में लाईट की अद्‌भूत सुंदर रोशनी से सजाया गया था । जिसे देखने के लिये रात्रि से कई भक्त आते थे ।(कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

अहमदाबाद मंदिर में हवेली में (प्रबोधिनी) देव उठनी एकादशी

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर आयोजन से विश्व का सर्व प्रथम महामंदिर अहमदाबाद में कार्तिक सुद-११ प्रबोधिनी एकादशी ता. १२-११-२०२४ मंगलवार शायं ४ से रात्रि के ११ बजे तक परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के समक्ष झोपडी के दर्शन खोलकर रखा गया था । शहर के हजारो हरिभक्त अनेक शाक के झोपडी का दर्शन करके धन्य हुए । श्री नरनारायणदेव के समक्ष परम्परागत पूरी रात श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ने ओच्छव किये थे । और बहनो की हवेली में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में रात्रि को ९ से ७ बजे तक धुन-कीर्तन कथा वार्ता बहनोने किया था ।

रात में १० से ११ के मध्य ठाकुरजी की तीन आरती का दर्शन हजारो भाई-बहन किये थे । आज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा संत महादीक्षा विधिवत रुप से पूर्ण हुई । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुदिसजी)

विश्व का सर्व प्रथम महामंदिर अहमदाबाद रंगमहोल में विराजमान श्री घनश्याम मराराज का पाटोत्सव

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण महामंदिर कालुपुर अहमदाबाद में भगवान श्रीहरि जब पधारते थे । तब रंग महल में रहते थे । वहाँ पर छत्री के नीचे कुँवा है । उसी के जल से सुखशैया पर बैठकर स्नान करते थे । प.पू. महाराजश्री के आज्ञा से रंग महल का उसी अवस्था में जीर्णोध्दार किया गया है । इस में जो घनश्याम महाराज की जो मूर्ति है । तथा अक्षरधाम में महाराज की मूर्ति में कोई अन्तर नही है । यह स्वरुप ध्यान करने योग्य है ।

कार्तिक सुद-१२ ता. १२-११-२०२४ बुधवार के दिन प्रातः ७-३० बजे पपू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा श्री घनश्याम महाराज का महाभिषेक अच्छे से किया गया । पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पाटोत्सव के यजमान अ.नि.प.भ. वल्लभभाई भूराभाई नसीत, अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नसीत - ह. प.भ. प्रविणभाई वी. नसीत और प.भ. नरसिंहभाई वी. नसीत - ह.नि. मौलिक आदि परिवार अलौकिक लाभ लिये थे । प्रातः ८ बजे अन्नकूट की आरती की गयी । प.पू. आचार्य महाराजश्री यजमान परिवार के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी शा. नारायणमुनिदासजी)

अहमदाबाद मंदिर में कार्तिक सुद पूनम सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रति मास पुनम की सत्संग सभा इस बार कार्तिक पूनम ता. १५-११-२०२४ शुक्रवार के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में स.गु. शास्त्री स्वामी सद्‌गुणदासजी के वक्ता पद से श्रीहरि के लीला चरित्र की कथा हजारो श्रोता सुना था ।

आज की सत्संग सभा ठाकुरजी का थाल, संत-हरिभक्तो की रसोई और ध्वजा के यजमान प.भ. अ.नि. मगनभाई डुंगर भोरडिया परिवार, गं.स्व,. हेमलताबेन मगनभाई भोरडिया, प.भ. जितेन्द्रभाई भोरडिया, पिन्टुभाई भोरडिया, प.भ. रजनीकांतभाई मगनभाई भोरडिया, अ.सौ. जयश्रीबेन रजनीकांतभाई भोरडिया, चित्रा, मैत्री, रुद्र, मंत्र आदि (जूना देवलिया गाँव मोरबी हाल गांधीनगर) ने महा अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुए । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । सभा का सुंदर संचालन स.गु. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजीने बढाया था ।(कोठारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) द्वारा सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के शुभ आशीर्वाद से तथा पू. महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से एप्रोच (बापुनगर) मंदिर के आगामी

द्विशताब्दी महोत्सव के विविध धार्मिक कार्यक्रम तथा सामाजिक सेवा के कार्यक्रम हो रहे है। जिसके अन्तर्गत ता. २३-११-२४ के दिन नियम निश्चय पक्ष की २० संकल्प सभा मे से ११ वे रात्रि का सत्संग सभा, अ.नि. रवजीभाई छगनभाई वाटलिया की पुण्यतिथि के अवसर पर उनके परिवार की तरफ से श्रीघर टेनामेन्ट के खुले विशाल जगह पर शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से हुई थी।

वक्ताश्रीने श्रीहरि की महिमा की बात किये थे। सत्संगी मुमुक्षुओ को अपने मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी प्रातः कार्यक्रम में पधारते है। इसमें भी पधारकर नरनारायणदेव के प्रतिनिष्ठा रखने की बात किये थे। इस अवसर पर नाथद्वारा और पोरडा मंदिर के महंत स.गु. स्वा. धर्मस्वरुपदासजी और शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी आदि संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे।

बडी संख्या में भक्तगण आकर सत्संग सभा का दिव्यलाभ लिये थे। एप्रोच मंदिर के पू. महंत स्वामीने सभा के संचालन के साथ अगले कार्यक्रम को बताये थे। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी द्वारा धोलका धाम दर्शन एवम् धुन

श्री स्वामिनारायण की परमकृपालु से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथे पूरे धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से धोलका मंदिर के पू. महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से तथा प.भ. श्री दासभाई के मारगदर्शन से ता. १०-११-२४ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, बाल मंडल तथा सत्संग समाज के साथ धोलका धाम श्री मोरली मनोहर देव तथा महाप्रसादी के चंद्रमौतेश्वर नागनाथ महादेव (परपोटिया-महादेव) तथा गणेश धोलका के महापर्सादी गणपति देव और श्रीहरि रायण विश्राम स्थान कर दर्शन करके धोलका मंदिर के सभा मंडप में दो धंटे तक धुन किये थे। धुन के अंत में शा. स्वामी अजयप्रकाशदासजी श्री मुरली मनोहर तथा प्रसादीभुत प्रत्येक स्थान की महिमा सुंदररुप से समझाये थे। पू. महंत स्वामी ने आशीर्वाद दिया था। सभी के लिये भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई थी। प.भ. हरिभाई दनुभाई रंघोलियाने यजमान पद का लाभ उठाये थे।

ता. १७-११-२०२४ के दिन प.भ. महादेवभाई डुंगरशीभाई पटेल और उनकी धर्मपत्नी जीवित चर्या के अवसर पर ६ घंटे तक धुन की थी। धुन के बाद एप्रोच मंदिर के पू. महंत स्वामीने आशीर्वाद दिया था। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में चलने वाली अनेक प्रवृत्तियो, समूह जनमंगल पाठ का प्रबन्ध

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १५-९-२४ दिन रविवार के दिन समूह जनमंगल पाठ का आयोजन किया गया था। समूह जन मंगल पाठ में लगभग २५ जितने हरिभक्त आये थे। प्रातः ८-३० से ११ बजे तक मंदिर के महंत स्वामी व्रजभूषणदासजी सभी को जनमंगल पाठ कराये थे। और कोठारी स्वामी भक्तिजीवनदासजी द्वारा प्रेरक कथा की गयी थी। आज के अवसर के यजमान उमाबेन कंदर्पभाई पाठक परिवार रहा था। २०० जितने हरिभक्त भोजन प्रसाद खाये थे।

प्रसादी के स्थल दर्शन

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के रजत-जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य पर हरिभक्त सादरा देश के आये प्रसादी के स्थल तथा हरिमंदरि के दर्शन हेतु यात्रा का आयोजन ता. १७-९-२०२४ मंगलवार के दिन रखा गया था। इस यात्रा में लगभग ५५ हरिभक्त आये थे। बाबुभाई पटेल तथा नवीनभाई पटेल द्वारा प्रेरक सेवा दी गयी थी।

त्रिदिवसीय रात्रिय कथा पारायण

श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२ के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री सहजानंद स्वामी चरित्र रात्रिय कथा पारायण के सुंदर आयोजन ता. २०-९-२४ से २२-९-२४ तक रात्रि ८-३० से ११ बजे तक कलोल तथा जमियतपुरा मंदिर के महंत शा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ने किया था। और पूरा आयोजन मंदिर के महंत व्रजभूषणदासजी स्वामी किये थे। पारायण में बड़े संख्या में हरिभक्त लाभ उठाये थे।

सत्संग सभा-९

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग सभा-९ का आयोजन ता. २५-९-२४ बुधवार के दिन रात्रि ८-३० से १०-३० के मध्य श्री स्वामिनारायण मंदिर कुडासण में किया गया था। वर्षा होने के बाद भी अधिक संख्या में हरिभक्त आये थे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर रजत जयंती महोत्सव के अर्न्तगत अनेक प्रवृत्तियो में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी तथा वहाँ के मंदिर के पू. महंत स्वामी व्रजभूषणदासजी खूब मेहनत से उत्सव का मार्गदर्शन और प्रेरणा दिये थे । सिनियर सिटिजन मंडल, युवक मंडल और महिला मंडल सभी सदस्य तन, मन, धन से उत्साहपूर्वक सेवा दिये थे ।(बिपीन पटेल)

श्रीहरि प्रसादीभुत गवाडा गाँव में कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्रीजी महाराज के चरणो से अंकित महाप्रसादीभुत गवाडा गाँव में कोठारी परिवार के वृध्ध लोको के जीवन पर्व के अवसर पर प.भ. रमेशभाई ठाकरशीभाई कोठारी, प.भ. घनश्यामभाई परसोतमभाई, श्री केतनभाई गोपालभाई, श्री कमलेश जयंतीभाई, श्री निशित रमेशभाई कोठारी, श्री भाग्येश रमेशभाई कोठारी आदि परिवार ने यजमान पद से श्रीजी महाराज के लीला चरित्रो की त्रिदिवसीय पारायण सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शा. स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद से ता. ३-११-२०२४ से ५-११-२०२४ तक हजारो कथा प्रेमी भक्त कथा का पान किये थे । इस अवसर पर वास्तु पूजन, महापूजा, पोथीयात्रा, दीप प्रगटीकरण बहन बेटीयों का सम्मान आदि अनेक कार्यक्रमो के अर्न्तगत हुआ था । धामो-धाम से आये संत लोग यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस अवसर पर पधारकर कथा सुनकर यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे । सभा का संचालन पू. कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजीने बढाया था । (कोठारी स्वामी, कालुपुर मंदिर)

श्रीहरि प्रसादीभूत वडु मंदिर की रजत जयंती के उपलक्ष्य में ब्रह्मचौरासी

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम परमपूज्य बडे महाराजश्री, परमपूज्य लालजी महाराजश्री और पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु द्वारा आयोजित श्री ब्रह्मभोजन चौरासी, अ.नि.प.भ. चंदूभाई रामदास पटेल वर्त लीलाबेन तथा हर्षदभाई की तरफ से ता. १३-१०-२०२४ के दिन सुंदर आयोजन किया गया था । इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी, स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने पधारकर मंगल प्रवचन में इस आयोजन की प्रशंसा किये थे । पू. स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी सभा का सुंदर संचालन किये थे । (समस्त सत्संग समाज वडु द्वारा कोठारी जयंतीभाई पटेल)

जेतलपुरधाम में २०० वर्ष के महापाटोत्सव के अवसर पर समूह महापूजा का आयोजन

परमकृपालु संकल्प मूर्ति श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और पू. स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से जेतलपुर धाम में विराजमान संकल्प श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के २०० वे पाटोत्सव महामहोत्सव के अवसर पर चातुर्मास के हर महीने की एकादशी के समूह महापूजा का अच्छा प्रबन्ध किया गया था । जिस में जेतलपुर गाँव के सभी भक्त और अगल-बगल के गाँव तमाम भक्त, हरिभक्त लाभ लिये थे । अपनी संस्कृत पाठशाला अभ्यास करते ब्राह्मणो की महापूजा कराये थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सोलैया के ६ट्ठे वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर धाम में पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर सोलैया गांव के ६ वे पाटोत्सव को ता. ९-११-२०२४ के दिन विधिवत रुप से मनाये ते । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. पी.पी. स्वामी और शा. जनमंगल स्वामी पधारे थे । तीनो संतोने कथा वार्ता करके ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक करके अन्नकूट आरती किये थे । तथा हरि भक्तो को सुंदर लाभ दिये थे ।(जनमंगल स्वामी जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल-वणझर सत्संग की प्रवृत्तियाँ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से बोपल मे अपने श्री स्वामिनारायण मंदरि के महंत स्वामी और संत मंडल द्वारा सत्संग की सुंदर प्रवृत्ति हो रहे है। हिंडोला उत्सव, कथा, पारायण, रवि, सभा, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, जलझीलनी श्री गणपति विसर्जन वरघोडा, बोपल, युवति मंडल द्वारा रात्रिय पंचान्ह पारायण ध्यानप्रिय स्वामी द्वारा श्रीहरि चरित्र कथा, बाल सभा जैसे अनेक कार्यक्रम बोपल में अपने मंदिर द्वारा संतो-हरिभक्तो ने किया था।(प्रविण उपाध्याय)

श्री संस्कारधाम बावला का २४ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर धाम में पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से श्री संस्कारधाम बावला मंदिर का २४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १५-१०-२०२४ से १९-१०-२०२४ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया था । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में पंचदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण स.गु. महंत शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद से हजारो कथा प्रेमी कथा श्रवण करने आये । कथा के मध्य शरदोत्सव, घनश्याम जन्मोत्सव, गद्दी पट्टाभिषेक और छाब अर्पण विधि उत्सव मनाया गया था।

ता. १९-१०-२०२४ प्रातः ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक संतो द्वारा किया गया था। यजमान परिवार ने पूजा का लाभ लिया था । इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर सभा में विराजमान यजमान प.भ. अनिलभाई नारणदास मोदी परिवार का सम्मान करके सभी भक्तो को खुश किये थे।

बहनो के आमंत्रण से प.पू.अ.सौ. लक्षअमीस्वरुप गादावालश्रीने पधारकर ठाकुरजी का दर्शन करके बहनो की सभा में सभी बहने आशीर्वाद दी धी। धामो-धाम से अनेक संत आये थे। पूरे उत्सव का संपादन व्यवस्था जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी के.पी. स्वामी, ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी बावला सत्संग समाज के सहयोग से हुआ था।

बावला मंदिर में दिपालवी उत्सव

काली चौदशी के दिन यहाँ के मंदिर में श्री हनुमानजी की पूजन आरती करके अन्नकूट रखा गया था । समूह चोपडा पूजन में १२० जितने बावला के हरिभक्त मंदिर में विधिवत चोपडा पूजन का लाभ लिये थे । निज मंदिर में सायं काल दीपक सजाकर दीपोत्सव मनाया गया था । नये वर्ष में ठाकुरजी की मंगला आरती में बड़ी संख्या में हरिभक्त दर्शन के लाभ लिये थे । अन्नकूटोत्सव, गोवर्धन, पूजा यजमान परिवार द्वारा की गयी थई । अन्नकूट में आरती में हजारो भक्त दर्शन करके सभा में महंत स्वामी ने सभी को नये वर्ष की शुभेच्छा दिये थे।(कोठारी श्री बालवा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुरा १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव एवम् शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुरा का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था । पाटोत्सव के अवसर पर ता. १८-११-२०२४ से २०-११-२०२४ के मध्य स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित धीरजाख्यान त्रिविदसीय कथा स.गु. महंत शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट) के वक्ता पद से हुई थी।

ता. २०-११-२०२४ की पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे। और प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे। सभा में पू. राम स्वामी (कोटेश्वर) सभा संचालन द्वारा भगवान सम्बन्धी बात किये थे । इसके बाद पूज्य लालजी महाराजश्री पाटोत्सव के यजमान प.भ. आदि परिवार को आशीर्वाद दिये थे। अलौकिक शाक का बघार करके सभी को शाक खिलाये थे।(कोठारी शा. मुनि स्वामी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल १११ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली श्री राधाकृष्णदेव प्रदेश के चूडा तालुका के कारोल गाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर का १११ वाँ पाटोत्सव कार्तिक सुद-७ ता. ८-११-२४ को विधिवत रुप से मनाया गया था । लिम्बडी के बहनो के मंदिर की सांख्ययोगी चन्द्रिकाबा और उनके मंडल के बहनो ने मंदिर में कथा वार्ता, धुन, कीर्तन करके अन्नकूट आरती उतारे सभी को सुंदर लाभ दिये थे । (को. नरेन्द्रभाई सोनी - कारोल)

धनुर्मास में विशेष सत्संग भक्ति

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वयं के अन्तर्गत लेकर ऐसे परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के परम पवित्र सानिध्य में तथा श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल की आज्ञा से प्रातः वंदनीय संतो की उपस्थिति में ता. १६-१२-२०२४ से १४-१-२०२५ पूरे मास प्रातः काल श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन का अलौकिक कार्य हो । उसके निमित्ते ता. १४-१-२०२५ के दिन मकरसंक्रांति पुण्य पर्व होने से आप सभी के जीवन में एकबार ऐसा पुण्य करके जीवन धन्य बनाये ।

मकर संक्रांति (उत्तरायण) पुण्य पर्व के अवर पर अलौकिक दान पुण्य

श्री नरनारायणदेव देश के समस्त हरिमंदिर में कोठारीश्री और श्री नरनारायणदेव देश के युवक मंडल प्रतिनिधिओ से विशेष अनुरोध है । कि अपने गाँव में उत्तरायण पर्व की झोली घुमाकर इस निमित्ते जो कोई अनाज, रकम, जीवन जरुरी पदार्थ दान में आये तो सभी वस्तुए अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में "आँगन" में जमा कराके रसीद प्राप्त करे । जिससे आप का सभी दान अनेक निराधारो तक जा सके । यह संकल्प अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और श्रीराजा है । इस लिये आँगन की सेवा वाली प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के देखरेख के अन्दर अपने सत्संगि बहनो द्वारा पूरा किया जाता है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के सीधे अवलोकन में "आँगन" का सुंदर संचालन होता है । आप आँगन को देखने आये तो देखे यहाँ पर बच्चे अनाथ रहते है । लेकिन आप को ऐसा महसूस नही होगा । पूरे धर्मकुल उनके संरक्षक है । जब गादीवालाश्री आँगन में आती है तो सभी बच्चे प्रेम से दौडकर आते है । यह कोई अनाथ आश्रम जैसा नही लगता है । यहाँ पर एक परिवार के रुप में रहते है । एक दूसरे के प्रति सभी प्रेम रखते है । संचालन करने वाली बहने अपने बच्चो की तरह रखती है । ऐसे सुंदर "आँगन" में आप के द्वारा की गयी सेवा मानवता का महान कृत्य होगा । अपना सम्प्रदाय सर्व प्रथम मानवता का धर्म सिखाता है ।

इस "आँगन" में दान देने पर ८०-जी के अर्न्तगत आयकर में लाभ मिलता है ।

महंत स्वामी

शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी का

श्रीहरि स्मृति सहित जयश्री स्वामिनारायण

उत्तरायण पुण्य (झोली) पर्व

नाम : ....

पता : ....

फोन नं. : ....मो.. : ....

उत्तरायण पुण्य पर्व

दि. 14-1-2025 को उत्तरायण-मकरसंक्रांति में श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारे तब इस कार्ड में अपनी इच्छानुसार धान जमा करके कार्यालय से रसीद प्राप्त करे। बाहर रहने वाले भक्त चेक/ड्राफ्ट और आनलाईन धन भेज सकते है।

विवरण	मूल्य	वजन	५ किला का मूल्य	आप की सेवा
चावल	४२००	१०० किलो	२१०	
गेहूँ	२५०	१०० किलो	१००	
मूँग	९५००	१०० किलो	४७५	
तिल	३०००	२० किलो	७५०	
चना की दाल	१९००	२० किलो	४७५	
अरहर की दाल	१५४००	१०० किलो	७७०	
मोगर की दाल	११०००	१०० किलो	५५०	
शुद्ध घी	७२००	१ डिब्बा	२४००	
तेल	२६००	१ डिब्बा	८६५	
गुड	५६००	१०० किलो	२८०	
चीनी	४३००	१०० किलो	२१५	
कुल	६४९५०		७०९०	

दान, वस्तु रुप में, नगद रुप में तथा चेक/ड्राफ्ट
“श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अडमदाबाद” के नाम से दे।
स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद ● मो. : ८२३८००१६६६

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

श्रावण सुद-१ न्यालकरण गृप - ह. अल्पेशभाई (वडोदरा), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. कलावतीबेन रमेशचंद्र गोविंदलाल पटेल (अहमदाबाद), वजुभाई (राजकोट), प.भ. मेघनाबेन सुधीरभाई पटेल (अहमदाबाद). **श्रावण सुद-२** प.भ.अ.नि. ज्योतिबेन हेमंतकुमार त्रिवेदी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), लीलानंद मेग्नेशियम. प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर). **श्रावण सुद-३** प.भ. योमो अंश आकाशभाई चौधरी (ईश्वरपुरा), प.भ.अ.नि. अरविंदकुमार केशवलाल महेता (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर). **श्रावण सुद-४** प.भ. दिव्यकांतभाई चिमनभाई पटेल (नार), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. सागरसिंह महेन्द्रसिंह झाला (अडवाल). **श्रावण सुद-५** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. वालबाई हरजी करशन वाघजीयाणी (सुखपर-कच्छ), बलोल भाल महिला मंडल. **श्रावण सुद-६** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जीग्नेशभाई रूपाभाई सिंधव (वणी), प.भ. प्रेमजीभाई करशनभाई पटेल (कलोल). **श्रावण सुद-७** प.भ. पालीबेन त्रिभुवनदास (देवडा-अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. शांताबेन चिमनभाई पटेल (कनीपुर), प.भ. पिनाक कल्पेशभाई गज्जर (अहमदाबाद), प.भ. पदमाबेन गोहिल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मनजीभाई नानजीभाई देवाणी (अहमदाबाद), प.भ. रमेशभाई वालजीभाई काथरोटीया (अहमदाबाद), प.भ. यक्ष निमेषभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अश्विनभाई कालुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. महेन्द्रकुमार कांतिलाल पटेल (वडु), प.भ. समीरभाई सुरेशभाई पटेल (झुंडाल), महिला मंडल गोरडका (गढडा देश). **श्रावण सुद-८** अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी गुरु चितारा स्वामी बलदेवप्रसाददासजी - ह. प.भ. मुकेश शामलदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जगदीशभाई रणछोडभाई पटेल (कालीगाम), प.भ. मावजी खीमजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ). **श्रावण सुद-९** प.भ.अ.नि. मंजुलबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. कानजीभाई विसरामभाई वेकरीया (सुखपर-कच्छ). **श्रावण सुद-१०** प.भ.अ.नि. विमलाबेन कचराभाई पटेल (कणभा), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. अ.नि. राजेन्द्रकुमार चंदुलाल सोनी (बावला), प.भ. भानुबेन प्रविणभाई सोमाणी (अहमदाबाद), प.भ. अंजनीबेन योगेशभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. चंदुजी प्रतापजी बिहोला (पालज-गांधीनगर). **श्रावण सुद-११** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. लालजी मनजी गाजपरीया (मांडवी-कच्छ). **श्रावण सुद-१२/१३** प.भ. निमिषा मयंक पटेल (मुंबई), प.भ. तन्वीबेन रमेशभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. मननभाई गीरीशभाई भीमाणी (सुरेन्द्रनगर), प.भ.अ.नि. मगनलाल गांडालाल टांक (राजकोट), प.भ. परेशभाई कांतिभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कांताबेन कृष्णाभाई पटेल (नारदीपुर), प.भ. सोनलबेन अजीतभाई पटेल (गणेशपुरा), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. मुकेशकुमार डाह्याभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हरजीवनदास देवजीभाई पटेल (गोठीब), प.भ. रीनाबेन वाघेला (अहमदाबाद), प.भ. नारणभाई मनजीभाई केराई (बलदीया-कच्छ), प.भ. अर्चनाबेन संजयभाई पटेल (उंझा), हरिॐ परिवार - ह. प.भ. शैलेषभाई (अहमदाबाद), प.भ. अशोकभाई बेचरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भरतभाई एन. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. गंगाबेन रवजीभाई नकुम (जामखंभालीया), प.भ. प्रभाबेन बलवंतभाई डोडीया (वाडला), महिला मंडल (वढवाण), प.भ. पूजाबेन विजयभाई पटेल (राणीप), प.भ. शर्मिष्ठाबेन भरतभाई (सुरत). **श्रावण सुद-१४** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. तेजलबेन जनकभाई पटेल (नारदीपुर), प.भ. बाबुलाल मणीलाल पटेल (वडु), प.भ. मितेषभाई रसिकभाई पटेल (आनंदपुरा), प.भ. मनहरभाई नाथाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. नैलेषकुमार अमृतलाल पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. स.गु. स्वामीश्री प्रेमजीवनदासजी (मूली), स.गु. शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी गुरु स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी(अहमदाबाद), प.भ. दिवालीबेन अमृतलाल पटेल (बिलीया), प.भ. महादेवभाई लालजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनसुखभाई सापरीया (राजकोट), प.भ. चौधरी अचलाराम गोलीया (वाली). **श्रावण सुद-१५** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. सूर्याबेन भरतकुमार पटेल (राणीप), प.भ. देवांगभाई धनजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. काशीबेन वेलजीभाई गाबाणी (सुरत), प.भ.अ.नि. हितेष परमार (राजकोट), प.भ. सुभीबेन मगनभाई पटेल (डांगरवा).

श्रावण वद-१ प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जयदेव करशनभाई गोहिल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. विजयभाई भाणजीभाई नाकराणी (उमरेठ). **श्रावण वद-२** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. लक्ष्मणभाई सोमाजी ठाकोर (गोविंदपुरा वेडा). **श्रावण वद-३** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. प्रेमजी लालजी गोंडलीया (भुज-कच्छ), प.भ. झबुबेन शांतिलाल काछीया (हालोल), प.भ. मनजी रामजी केराई (कोडकी-कच्छ), प.भ.अ.नि. नटवरभाई मणीलाल पटेल (अहमदाबाद). **श्रावण वद-४** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. राधाबाई करशन वेकरीया (कुंदनपुर-कच्छ). **श्रावण वद-५/६** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. मोक्ष केतुल पटेल (वावोल), प.भ. मनीषभाई नाथाभाई डुंगराणी (सुरत), प.भ. मंजुलाबेन ए. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भूपतभाई नागजीभाई बोधाणी

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

(सुरत). **श्रावण वद-७** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. शालिन अरविंदभाई दोंगा (बापुनगर), गं.स्व. सवितावेन गोविंदलाल पटेल (खोरज-खोडीयार), प.भ. घनश्यामभाई चिमनलाल दक्षिणी (अहमदाबाद). **श्रावण वद-८** प.भ.अ.नि. बीनाबेन मनजी हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. कनैयालाल खेंगारभाई सोनी (दहेगाम), प.भ. हर्षित भरतभाई पटेल (रानासणा), प.भ. लीलाबेन दिलीपकुमार चौधरी (प्रतापपुरा), प.भ. रमेशभाई प्रफुलभाई पटेल (गांधीनगर). **श्रावण वद-९** लीलालनंद मेग्नेशीयश - ह. प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. अक्षर गोलाणी (निकोल), प.भ. बाबुभाई अंबालाल पटेल (वेडा), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. कुवरजीभाई मावजीभाई कुंडरीया (मिरजापर-कच्छ). **श्रावण वद-१०** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. रमणभाई शंकरभाई भूलाभाई (उनावा). **श्रावण वद-११** प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. तखतबेन कानाजी चौधरी (बालवा). **श्रावण वद-१२** प.भ. लीलाबेन चंदुभाई खेर (बलोल-भाल), प.भ. अश्विनभाई बाबुभाई सोनी (कांकरिया), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), श्री स्वामिनारायण सत्संग महिला मंडल (आदिश्वरनगर-नरोडा), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर). **श्रावण वद-१३** अ.नि. स.गु. वासुदेव स्वामी (देवडा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. दामिनीबेन हरिकृष्णभाई पटेल (पोर-गांधीनगर), प.भ. श्लोक अरविंदभाई दलवाडी (चराडवा). **श्रावण वद-१४** प.भ. जादवा वाघजी वाघजीयाणी (मेघपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल (कालुपुर), प.भ. डॉ. रवि पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. लालजीभाई प्रभुभाई पटेल (खेराली), प.भ. मयुरभाई नविनचंद्र गणात्रा (अहमदाबाद), प.भ. सी. एम. परिवार (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. विक्रमभाई ईश्वरभाई शंकरभाई पटेल (उनावा). **श्रावण वद-३०** प.भ. नटवरभाई प्रह्लादभाई पटेल (कलोल), प.भ.अ.नि. केशवलाल के. महेता (वेरावल), प.भ. रावजीभाई अंबालाल पटेल (झुंडाल).

भादरवा सुद-१ प.भ. चंद्रकांतभाई नटवरलाल पंचाल (अहमदाबाद), प.भ. पर्व दिपककुमार पटेल (बायड), प.भ. नीतिनभाई वालाणी (पालडी). **भादरवा सुद-२** लीलानंद मेग्नेशियस - प.भ. मयंकभाई कामदार पोरबंदर), प.भ. धरमशीभाई डाह्याभाई कणझरीया (श्रीजीनगर). **भादरवा सुद-३** प.भ. नाथीबेन लालाभाई पटेल (पोर), प.भ. निकुलकुमार कालाभाई (मकाखाड), प.भ. मनोजभाई चंद्रवदनभाई महेता (नारणपुरा). **भादरवा सुद-४** प.भ. नयनाबेन विष्णुभाई पटेल (पोर), प.भ.अ.नि. रमेशभाई दवालभाई पटेल (गामडी), प.भ.अ.नि. पेईन्टर पुरूषोत्तमदास वशरामभाई (वडताल), श्री नरनारायणदेव महिला मंडल (कोटेश्वर), प.भ. हेमलताबेन मुकेशभाई पटेल (न्यु राणीप), प.भ.अ.नि. अजीतभाई एस. जोशी (अहमदाबाद). **भादरवा सुद-५** प.भ. उषाबेन मुकेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ. परसोतमभाई सोमाभाई पटेल (अहमदाबाद). **भादरवा सुद-६** प.भ. अरविंदभाई नारणभाई पटेल (सोजा), प.भ. केतनभाई विठ्ठलभाई पटेल (वडोदरा), पियुषभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. यतिनभाई पी. पटेल (पोरडा), प.भ. सवितावेन जे. सोनी (अहमदाबाद), प.भ. धर्म रमेशभाई पटेल (अहमदाबाद). **भादरवा सुद-८** प.भ. पार्थ रजनीशकुमार भावसार (अहमदाबाद), प.भ. सवितावेन प्रह्लादभाई पटेल (कोठा). **भादरवा सुद-९** प.भ. रमणभाई पी. पटेल (गांधीनगर). **भादरवा सुद-१०** श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु, प.भ. घनश्यामभाई आदरभाई पटेल (मुबारकपुर). **भादरवा सुद-११** प.भ.अ.नि. डाह्याभाई लालजीभाई चौधरी (ईश्वरपुरा). **भादरवा सुद-१२** प.भ. विनोदभाई तथा प.भ. विनोदभाई (राणीप), प.भ. घनश्यामभाई शंकरभाई पटेल (कडी), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. कविन्द्राबेन - सुमनबेन शाह (नारणपुरा), प.भ. दशरथभाई मगनभाई पटेल (गांधीनगर), पनाह ज्वेलर्स स्टुडीयो - नील सोनी (अहमदाबाद), प.भ. डॉ. जशमीन पटेल (कोबा), श्रीहरि प्रसन्नार्थे - ह. स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी (झुंडाल), श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज (नवा वाडज), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर). **भादरवा सुद-१३** प.भ.अ.नि. मावजी खीमजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. आकांक्षा जी. पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. वालजी कुरजी पिंडोरीया (मानकुवा-कच्छ). **भादरवा सुद-१४** प.भ.अ.नि. मुलचंददास ठाकोरलाल पटेल (खंभात). **भादरवा सुद-१५/१** प.भ.अ.नि. सोमाभाई वेणीभाई पटेल (बामणगाम), प.भ.अ.नि. वसंतभाई त्रिभोवनदास टांक (अहमदाबाद), प.भ. पोपटभाई देवजीभाई पटेल (धरमपुर), प.भ. पार्थ गोविंदभाई चौधरी (प्रतापपुरा), प.भ.अ.नि. योगेशभाई गोरधनदास पाटडीया (अहमदाबाद), प.भ. रणछोडभाई मोतीभाई पटेल (मुबारकपुरा).

भादरवा वद-२ सांख्ययोगी रसीलाबेन करशन (नारायणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. मगनभाई जीवराजभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. देवजी कुरजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. दिपककुमार जसवंतभाई पटेल (उंझा), प.भ.अ.नि. जेशंगभाई गेमरजी चौधरी (बालवा). **भादरवा वद-३** प.भ. रमीलाबेन घनश्यामभाई दलाल (अहमदाबाद), प.भ. प्रतापभाई राजाभाई खेर (बलोल-भाल), प.भ. गोविंदसिंह कानजीभाई वाघेला (गोधावी). **भादरवा वद-४** प.भ.अ.नि. सिल्की बिन्देशभाई पटेल (गांधीनगर), हरिकृष्ण महाराज (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. रेवाबेन नारणदास पटेल (संतरामपुर). **भादरवा वद-५** प.भ.अ.नि. जसवंतभाई दशरथलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. हेमंत शशीकान्त का. (अहमदाबाद), प.भ. चंद्रिकाबेन ईन्द्रवदन पटेल (मेमनगर), प.भ. पियुषकुमार जेशंगभाई

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

पटेल (आकरूंद), प.भ.अ.नि. भोगीलाल बाबुलाल राजवीर (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. वासुदेवभाई बालाशंकरभाई (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. अमृतलाल जोईताराम भावसार (अहमदाबाद), प.भ. राजेशकुमार खोडाभाई पटेल (बोपल), प.भ. आरतीबेन दशरथभाई (न्यु राणीप), प.भ. नानजीभाई काबरीया (नरोडा), प.भ.अ.नि. धीरजलाल घनश्यामभाई पटेल (मणीपुरा), प.भ. रेखाबेन पियुषकुमार पटेल (आकरूंद), प.भ. मनजीभाई चंदनबेन चौहाण (बोटाद), प.भ.अ.नि. गुणवंतभाई पी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कंचनबेन शंकरभाई पटेल (अहमदाबाद). **भादरवा वद-६** अ.नि. स.गु. स्वा. कृष्णजीवनदासजी (बापु स्वामी) (कांतरोली), प.भ. भोलीदास मोतीदास पटेल (अहमदाबाद). **भादरवा वद-७** प.भ.अ.नि. लाडुबेन हरजीभाई (शिलज), प.भ.अ.नि. देवजी कुरजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ.अ.नि. दिनकरराय त्रिकमलाल आचार्य (अहमदाबाद). **भादरवा वद-८** प.भ.अ.नि. नरेन्द्रभाई चिमनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. उर्मिलाबेन चिमनभाई पटेल (गोरज), प.भ.अ.नि. जसुमतिबेन कांतिलाल दवे (गोरज), प.भ. शैलेषभाई गोविंदभाई सोजीत्रा (बापुनगर), प.भ.अ.नि. नर्मदाबेन वसंतभाई टांक (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. भास्करभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद), प.भ. धनलक्ष्मीबेन मनहरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. चंचलबेन भक्तिदास पटेल (डांगरवा), प.भ. कमलेशभाई बाबुभाई (अहमदाबाद). **भादरवा वद-१०** प.भ. मिनाक्षीबेन रविकांत मस्की (अहमदाबाद), प.भ. मंजुलाबेन बाबुभाई वरमोरा (रामराजपुर), प.भ.अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब (अहमदाबाद). **भादरवा वद-११** प.भ. नरेन्द्रभाई कल्याणभाई पटेल (कडी), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर). **भादरवा वद-१२** प.भ.अ.नि. बाबुभाई वेलजीभाई पटेल (निकोल), प.भ.अ.नि. भीमजीभाई मेघजीभाई डोबरीया (निकोल), प.भ. ध्रुवकुमार भीखाभाई पटेल (भीमकुई), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. नारणदास जोईताराम पटेल (चडासणा), प.भ.अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नसीत (भायावदर), प.भ. शांताबेन कालीदास पटेल (कुंडाल), प.भ. भगवतीबेन हसमुखभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. विलासबेन रमणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अमृतभाई जेठाभाई पटेल (सापावाडा), प.भ.अ.नि. रमेशभाई विरचंदभाई पटेल (अहमदाबाद), श्री नरनारायणदेव महिला मंडल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. समजुबेन शामजीभाई फाचरा (राजकोट), प.भ.अ.नि. शांताबेन खीमजीभाई सुहागीया (पीठवडी), प.भ. हरिकृष्णभाई पटेल (गोधरा), प.भ. गोरधनभाई शीवाभाई पटेल (अहमदाबाद). **भादरवा वद-१३** प.भ. बलदेवभाई जोईताराम चौधरी (नरोडा), प.भ. आहान सन्नी पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पुरबाई कल्याण नानजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. कैलाशबेन कल्याणसिंह राठोड (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. चंद्रकान्त केशवलाल महेता (अहमदाबाद). **भादरवा वद-१४** प.भ.अ.नि. अंबालाल भूलाभाई पटेल (पोर-अहमदाबाद), प.भ. नरेन्द्र प्राणजीवन पारेख (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. जयेन्द्रकुमार सी. भावसार (अहमदाबाद), प.भ. शांताबेन जयंतीभाई मीस्त्री (मालपुर), प.भ. कपिल नाकर (पूना), प.भ. मिलीबेन सिध्धार्थभाई पटेल (चांदखेडा), प.भ. धीरूभाई वेकरीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मणीबेन मणीभाई पटेल (बीलासीया). **भादरवा वद-३०** प.भ. उदयकुमार कानजीभाई टांक (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. काशीबेन बबलदास पटेल (मोखासण), प.भ. कुंदनबा वसंतराय झगडा (अहमदाबाद), प.भ. तपस्वी महेता (अहमदाबाद), प.भ. नागेशभाई (अहमदाबाद), प.भ. दिपककुमार चिमनलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भरत मनुभाई पटेल (बारेजा), प.भ.अ.नि. बाबुलाल मगनभाई सोनी, प.भ. चिराग नरेन्द्रभाई थानकी (साणंद)

निम्न लिखित मंदिर के नये महंत स्वामीनी नियुक्ति

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिरना नवा महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री मुक्तस्वरूपदासजीने नियुक्त किया गया है।

माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिरना नवा महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री अजयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजीने नियुक्त किया गया है।

कलोल श्री स्वामिनारायण मंदिरना नवा संयुक्त महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री उत्तमचरणदासजी गुरु महंत स.गु. शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा)ने नियुक्त किया गया है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

मोतीपुरा गाँव में कथा के अवसर पर आशीर्वाद देते
प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

मेडजीना मुवाडा गाँव के सभा में आशीर्वाद देते
प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर में सभा को आशीर्वाद देते और हनुमानजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

गवाडा कथा के अवसर पर और उनावा मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ५२ वे प्राकटोत्सव के अवसर पर न्यु निकोल सभा में आशीर्वाद देते ।

डेरीमट (मेलबोर्न) ओस्ट्रेलीया मंदिर के पाँचवे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

ओकलेण्ड (न्युझीलैण्ड) मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री सभा में उपस्थित अहमदाबाद से पधारे संत मंडल ।

Praful Kharsani

सीडनी (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।